वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जुलाई 2019

* *साथी सेवकों का सम्बन्ध*
* *स्वास्तित्व यज्ञ क्या है?*
* *विशुद्ध परोपकारी और स्वार्थपरायण मनुष्यों के जीवन में अन्तर*
* *देव ज्योति में ही हमें अपनी उल्टी दृष्टि का बोध होता है।*
* *आत्मिक सत्य ज्ञान की आवश्यकता और उपलब्धि*
* *एक गृह में अति हितकर साधन*

देवात्मा फरमाते हैं।

भगवान ने फरमाया - धतूरे के वृक्ष से पत्ते तोड़ देने से वह वृक्ष धतूरे का ही रहता है, आम का वृक्ष नहीं बन जाता। इसी तरह पाप छोड़ देने से क्या होगा? फर्ज करो कि एक मनुष्य धन अनुराग से परिचालित होकर चोरी करता था, उसने चोरी छोड़ दी, रिश्वत छोड़ दी। पहले ली हुई रिश्वत भी वापिस कर दी। यह सब छूट गया, और कुछ भलाई भी आई। मगर धन का प्यार वही रहता है। वह धतूरा ही रहा। (यह अच्छा है कि कोई देता है, लेकिन नीच भावों से मोक्ष और उच्च भावों का विकास भी होना चाहिए)।

एक - एक जन ने मांस खाना छोड़ दिया, मगर स्वाद अनुराग वैसा का वैसा ही रहा। वह उसका गुलाम रहा। लड़कियों का वध होना तो रुक गया, उनकी पालना भी होने लगी मगर सन्तान अनुराग की गुलामी वैसी ही रही। अब जो खुद गुलाम हैं, वह दूसरों को गुलामी से कैसे निकाल सकते हैं, पापों को छोड़ देने से तो केवल अधर्म में कमी आती है। धर्म राज्य में प्रवेश कहां हुआ है?

घमण्ड सुख अनुराग से परिचालित होकर एक - एक जन समझता है कि मैं बड़ा हूँ, बढ़िया हूँ। मैं किसी के सामने घटिया नजर न आऊं। ऐसा जन हर वक्त झूठ में रहता है। अगर कोई उसको झूठमूठ भी बढ़िया कहे, तो भी खुश होगा। स्वार्थी मनुष्य चाहता है कि मैं किसी के काम न आऊं। अभागा है वह मुल्क जिसके लोग खुदगर्ज हैं। खुदगर्ज इन्सान अपने उपकारियों के भी काम आना नहीं चाहता। स्वेच्छाचारी कहता है कि मेरा जैसा जी चाहेगा मैं वैसा करूंगा। प्रशंसा सुख अनुरागी की यह ख्वाहिश रहती है कि हर समय प्रशंसा हो। अगर इस प्रकार के नीच अनुराग तुम में मौजूद हैं, और उनकी गुलामी है, तो तुम धर्म जगत में प्रवेश करने के काबिल नहीं हुए। इन सुखों के जब तक अनुराग मौजूद हैं, तब तक एक तो मनुष्य मिथ्या में रहता है, क्योंकि वह एक या दूसरे प्रकार के सुख को अपना लक्ष्य रखता है, जब कि किसी प्रकार का भी सुख मनुष्य का लक्ष्य नहीं है। दूसरे नीच सुख अनुरागों से अहित की उत्पत्ति होती है। फिर एक - एक नीच अनुराग की अलग - अलग नीच घृणाएं हैं। जहां कोई तुम्हारे नीच अनुराग में रुकावट पैदा करेगा, तो झट तुम उससे दूर हो जाओगे।

उसके पास जाने को जी नहीं करेगा। उसकी शक्ल देखने को दिल नहीं करेगा। उसके लेखों को पढ़ने को दिल नहीं करेगा। भगवान ने श्रीमान देवत्व सिंह जी की मिसाल दी कि उनके जीवन में एक समय ऐसा आया कि वह ऐसी तहरीरों को परे फैंक देते थे कि जिनमें उनकी किसी बुराई को प्रगट किया गया हो। कहते थे कि मेरी तस्वीर है तो बुरी; मगर उसको बुरा न दिखाओ। मोक्ष की जरूरत नहीं महसूस करते थे। वह मेरे पास आने से कतराते थे। मीटिंग में आ बैठते थे, मगर यूं नजदीक न आते थे।

सूचना

सब पाठकों की सेवा में निवेदन है कि जून और अगस्त का धर्म जीवन कुछ आवश्यक रूकावट के कारण आपको उपलब्ध नहीं हो सकेगा, आशा है कि आप क्षमा करेंगे।

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 6
जुलाई 2019
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

साथी सेवकों का सम्बन्ध

गुरु महाराज ने साथी सेवकों के परस्पर सम्बन्ध के विषय में अपनी अद्वितीय ज्योति की लक्ष्मण रेखा इस प्रकार खीचीं :- **"जो आत्मा जहां तक गाढ़-रूप से मेरे साथ जुड़ा हुआ है, वहां तक उसके लिये आवश्यक है कि वह कुल ऐसे जनों को जो मेरे साथ जुड़े हैं, और जिन पर जहां तक मेरा अधिकार हो चुका है, सन्मान व प्यार की दृष्टि से देखें और अपने को उनका और उनको अपना समझे। परन्तु यदि किसी की यह गति नहीं, वह मेरा नहीं हो सकता।"**

जिस प्रकार बहन भाईयों के अन्दर एक माता पिता का, एक गोद का, एक खून का और एक मां के दूध का सांझा सूत्र होता है; जो उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़ने के लिए, एक दूसरे का होने के लिए और एक दूसरे के दुःख का भागीदार होने के लिये प्रेरित करता और मजबूर करता है, उसी प्रकार साथी-सेवकों के भीतर भी एक अद्वितीय देवात्मा गुरु का, एक अद्वितीय शिक्षा का, एक ही नीचता से निकलने और उच्च जीवन पाने के मनोरथ का और उच्च परिवर्तनकारी एक अद्वितीय देव प्रभावों का, अर्थात् देव ज्योति और देव तेज की पवित्र सांझ के सूत्र का रिश्ता है। प्रत्येक सेवक के भीतर पूजनीय भगवान् की विलक्षण देव ज्योति पहुंचती है, प्रत्येक सेवक के भीतर उन के देव तेज का अमल होता है। गुरु महाराज की ज्योति और देव तेज को ग्रहण करके ही कोई जीवन परवर्तित होता है, कोई आत्मा सेवक बनने के लिए तैयार होता है और बनता है। प्रत्येक सेवक में गुरु महाराज के देव रूप का कुछ न कुछ अंश वर्तमान होता है, देवात्मा के देव प्रभावों की गहरी छाप होती है। देवात्मा का विशेष कार्य वर्तमान होता है। देवात्मा का धर्म-रूप जहां तक आत्मा में प्रवेश करता है, वह तकाजा करता है कि देव रूप से प्राप्त उस अंश को प्रत्येक सेवक सत्कार, स्नेह, सद्भाव, सम्मान और श्रद्धा की आंखों से देखे। उस अंश को गुरु की तरह अपना समझे, अपने आपको उस गुरु अंश का, जो प्रत्येक सेवक के भीतर उच्च परिवर्तन के रूप में, देव प्रभावों के रूप में बैठा है। जो ऐसा नहीं करता वह देवात्मा के रूप को ही अपमानित करता है। वह देवात्मा का नहीं हो सकता, जिसका दिल देवात्मा के प्रभावों के कार्य के आगे नहीं झुकता और अश-अश नहीं करता, जिसकी श्रद्धा इस खुराक से तृप्त नहीं होती, वह न किसी सेवक के लिए सगा है और न देवात्मा को ही कुछ समझता है। वह केवल और केवल अपने नीच-भावों का सगा है।

देवात्मा सत्गुरु का होने के लिए, उनके देव प्रभावों से प्रभावित होने के लिए, देवात्मा की शरण के अद्वितीय अधिकार को सफल करने के लिए सब साथी सेवकों से सम्बन्ध अनुभव करना आवश्यक है। जो साथी सेवकों से सम्बन्ध अनुभव नहीं कर सकता, वह आत्मा देवात्मा का भी नहीं हो सकता।

साथी सेवक एक पेड़ के ही फल और पत्ते हैं, उन की रूह के रग रेशे में एक ही पेड़ का जीवन रस प्रवाहित है। इसलिये वह एक दूसरे के बेहद निकटवर्ती और अपने हैं। परस्पर स्नेह और सत्कार के पात्र हैं।

सेवकी का महा अधिकार कब प्राप्त होता है? सेवकी के ताज का कोई मनुष्य कब अधिकारी होता है? जब :-

(1) कोई आत्मा मिथ्या गुरु, मिथ्या देवी देवताओं को त्याग करके सत्य उपास्य देवात्मा का विश्वासी बनता है।

(2) जब कोई सौभाग्यवान् आत्मा अपने जीवन में आठ मोटे-मोटे पापों से विरत होने और सारी उमर विरत रहने का चाहवान हो जाता है।

उपरोक्त सत्य और शुभ की मूल शर्तों को पूरा करके कोई मनुष्य देवात्मा के सेवक मण्डल में शामिल हो जाता है। इस प्रकार जब तक वह शर्तें पूरी रखता है, वह सारे सेवक दल के स्नेह, सम्मान और प्यार का अधिकारी बन जाता है।

मनुष्यात्मा अधूरी गठन रखता है। प्रत्येक मनुष्य में कमियां हैं, उसकी गठन दोषपूर्ण है। फिर सेवक भी इस नियम से बाहर नहीं। उनसे भी समय-समय पर अवज्ञाएं होंगी। बड़ी से बड़ी गल्तियां करके भी उपरोक्त दो शर्तें पूरी करके एक एक सेवक सन्मान और स्नेह का पात्र है। सेवक होना गल्तियों की तुलना में अधिक वज़नदार है। उसकी गल्तियां दर गुजर करना, प्यार और हमदर्दी से उनको सुधारना, परन्तु उसको अपना ही जानना, प्रत्येक मनुष्य का फर्ज़ है।

उपरोक्त दोनों शर्तों अर्थात् मिथ्या और मोटे-मोटे पापों से विरत रहने वाला व्यक्ति किसी सेवक या सेवकों के समूह का शत्रु नहीं हो सकता। किसी मिथ्या और पाप से रहित व्यक्ति से गुरु दर की थोड़ी बहुत सेवा करने वाले को विरोधी, शत्रु गैर देखना किसी दोषपूर्ण सोच का ही काम हो सकता है। सेहत मन्द सोच ऐसी चिन्ता भी नहीं कर सकती।

प्रत्येक सेवक बड़ा या छोटा सत्कार के कैसे योग्य है, यह हमें फरिश्ता तहसीलदार सरदार सावन सिंह जी की वह घटना बता सकती है, जिस प्रकार उन्होंने कचहरी का काम छोड़कर, कहलाने वाले दलित-जाति के सेवक की परिक्रमा की और कहा, "जिथे मिले गुरु सिखड़ा झुक-झुक लागूं पाए।" यह तो साथी सेवकों के प्रति सत्कार का आदर्श है। जो साथी सेवकों को स्नेह, प्यार और सन्मान नहीं दे सकता, अपनत्व नहीं दे सकता, वह गुरु की निकटता भी हासिल नहीं कर सकता।

धर्म की दुनिया में सेवकों का दर्जा दूसरे दर्जे पर है, पहला दर्जा गुरु महाराज का है। सेवकों के द्वारा ही गुरु की ज्योति हम तक पहुंची है, इसलिए वह हमारे उपकारी और हितकारी हैं, बहुत ही कीमती हैं।

"सबसे से बढ़कर वह सम्बन्धी, उच्च जीवन जो देवें दान।" साथी-सेवक इसलिए भी उपकारी हैं कि वह बुनियादी पत्थर बन कर काम आए हैं। उन्होंने बड़े-बड़े त्याग और समर्पण करके गुरुदान के प्रवाह को जारी रखा है और आगे पहुंचाया है। कईयों ने टी. बी. लगवा ली और जल्दी इस दुनिया से कूच कर गए, परन्तु गुरु की जलाई शमा को रोशन रखा। कईयों ने पूजनीय भगवान की पवित्र जात की सेवा करके

जीवन सफल कर लिया। कईयों ने डिब्बा दान मांगा, किसी ने स्त्री हो कर सुबह बच्ची का देहान्त हुआ, तो उसी शाम को दान मांगा, गुरु की रिक्शा खीचीं, उच्च से उच्च परिवर्तन पैदा किए, कईयों ने उच्च लेखों और पुस्तकों का खजाना दिया। कई उच्च, भरोसे योग्य, कुर्बानी और वफा की ठोस मिसाल बने। कईयों ने ज़मीनें और मुरब्बे दान में दिए। कईयों ने समाज की सम्पति को बढ़ाया। कईयों ने अनोखे गीत लिखे, कईयों ने श्रद्धा-भाव से भरकर गीतों का गान किया। कईयों ने स्त्रियों, कईयों ने पुरुषों की शिक्षा का व्रत धारण किया। कईयों ने संस्थाएं कायम कीं और उन्नत कीं। कईयों ने पुरुष होकर पर पुत्रियों की रक्षा करके गुरु गौरव को बढ़ाया। कईयों ने प्रतिज्ञा-पालन, ईमानदारी-पवित्रता के अनोखे दृष्टान्त पैदा किए। कईयों ने उच्च साधन और आत्म चिन्तन के साधन के रिकार्ड कायम किए जिससे उच्च जीवन का खमीर पैदा हुआ, जिस से मरती हुई आत्माएं बचीं। ऐसे साथी सेवकों का होना हमारे लिए एक तरफ फख़्र की बात है, दूसरी तरफ उनके लिए सत्कार और मुहब्बत से भरे रहना हमारा पाक कर्त्तव्य भी है।

साथी सेवकों के साथ सम्बन्ध खराब करने वाले हमारे अपने भीतर के ही नीच भाव हैं। विशेष रूप से हमारा स्वार्थ, हमारा घमण्ड, नीच घृणा और मान सम्मान का अनुचित अधिकार आदि किसी भी नीच भाव पर चोट लगने से हमारे भीतर नीच घृणा पैदा होती है। इससे हम फट जाते हैं, मुँह मोड़ लेते हैं, दूरी पैदा होती है, शक्ल देखना नहीं चाहते, बात करना नहीं चाहते, दूसरों की वर्तमानता को सहन नहीं कर सकते।

गुरु महाराज (साथी सेवकों को) नीच घृणा करने के सम्बन्ध में अपनी ज्योति देते हैं :-

"किसी भी मनुष्य को चाहे वह तुम्हारे साथ कितना ही बुरा सलूक करे, घृणा कभी नहीं करनी चाहिए।"

"मनुष्य के शारीरिक-जीवन को जैसे संखिए आदि का ज़हर नष्ट कर देता है, उसी प्रकार आत्मा के जीवन को उसकी नीच घृणाओं का जहर नष्ट कर देता है।"

"नीच घृणा ज़हरे कातिल है। यह आत्मा का कुछ भी बनने नहीं देती। धर्म-अभिलाषी-जन के भीतर सहन शीलता की इतनी शक्ति आनी चाहिए कि वह दूसरों से बुरा सलूक पाकर उससे फट न जाए; उल्टा उसका भला करना चाहे, उसके लिए भी हमदर्दी का भाव पैदा हो तो ही दूसरे के हृदय पर असर होता है।"

साथी सेवकों को घृणा करना अधोगति है, महा अनर्थ है इससे बचने की अधिक से अधिक जरूरत है।

कर्मचारियों और प्रचारकों के परस्पर सम्बन्ध के विषय में पूजनीय भगवान् ने अपनी विशेष ज्योति में लक्ष्मण रेखा इस प्रकार खीचीं है :-

"जिन्होंने अपने आप को मेरे मिशन के लिए भेंट करके, मेरी खुशखबरी के प्रचार और आत्माओं के उद्धार और उन को मेरे साथ जोड़ने का व्रत लिया हो, उनके लिए यह विशेष रूप से आवश्यक है कि वह अपनी पुरानी, विकार भरी, अपवित्र अवस्था से पूर्ण मोक्ष लाभ करके इस बात का सबूत देवें कि वह मुझे अपनी कुल बात चीत और कुल चाल ढाल और बर्ताव के द्वारा सबसे बढ़कर स्थान देते हों और मेरे पीछे मेरे प्रचारकों को प्रेम करते हों और उनके साथ किसी प्रकार का द्वेष, ईर्षा आदि न रखते हों और किसी को अपने से बेहतर और उन्नत होता देखकर कुढ़ते नहीं

एवं खुश होते हों और अपने नाम या पद या आराम या किसी और बात को सामने रखकर मिशन की सच्ची महिमा और उसके प्रबन्ध में कोई खराबी या विघ्न न पैदा करते हों।

उक्त देव वाणी में गुरु महाराज ने फरमाया है :-

(1) प्रचारकों और कर्मचारियों के लिए यह विशेष रूप से आवश्यक है कि वह अपनी-अपनी जन्म-जात नीच प्रकृति से मुक्त हो गए हों, विशेषकर ईर्षा, द्वेष वा नीच घृणा से बहुत ऊपर उठ गए हों।

(2) वह कुल प्रचारकों को जिन्होंने गुरु मिशन में जीवन भेंट किए हुए हैं, प्यार करते हों। जो साथी प्रचारकों को प्यार नहीं करता, वह गुरु का सम्मान नहीं करता।

(3) वह किसी प्रकार का द्वेष या ईर्ष्या भाव न रखते हों।

(4) किसी को किसी पहलू में बेहतर व्यवस्था में देखकर सड़ते-कुढ़ते न हों।

(5) वह अपने नाम पद, सुख स्वाद के इतने अनुरागी न हों कि उनकी खातिर वह साथी कर्मचारियों के मान, पद व अधिकार का ही अपहरण करने से न रुक सकते हों।

(6) ऐसी अवस्था रख कर कर्मचारी मिशन के इन्तजाम में बेहद खराबी पैदा करके बेपनाह हानि कर सकते हैं।

(7) श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी से महान कम ही कर्मचारी थे। उनसे प्राय: सब कर्मचारी नीचे थे। फिर भी वह स्वयं कर्मचारियों के कमरों के आगे जाकर सुबह के समय सिर रखकर प्रणाम करते थे। यह उनका उच्च रुहानी स्वास्थ्य-कर साधन था। उन्होंने किसी कर्मचारी को पछाड़ने या उसके अधिकार का अपहरण करने का कभी कोई संग्राम नहीं किया। वह उपरोक्त ईर्ष्या द्वेष से मुक्त थे। ईर्ष्या द्वेष के भाव रखकर कर्मचारी खाना जंगी का शिकार हुए बिना नहीं रह सकते। वह एक वा दूसरे दोष की आड़ के पीछे सारी समाज के गौरव, प्रबन्ध व कारज की महा-हानि किये बगैर नहीं रह सकते।

(8) साथी सेवकों का सम्बन्ध बहुत स्नेह व प्यार-मयी होना चाहिए। कर्मचारियों का सम्बन्ध जिस प्रकार परस्पर प्यार, श्रद्धा, कृतज्ञता व शुभकामना से भरा होना चाहिए, उसका अनुमान करना कठिन है।

(9) गुरु महाराज ने फरमाया है कि किसी को स्थान से स्थगित करने से पहले प्रबन्ध यह बता सकता हो कि उसने एक-एक सेवक की रक्षा के लिये क्या-क्या यत्न किये है। अगर कोई यत्न किये बगैर निष्कासित किया जाता है, तो यह मनुष्यात्मा की नीच भावनाओं की लीला है।

(10) "जब तुम किसी को निकालो, तो तहकीकात करके निकालो और यह नोट हो कि तुमने उसकी बेहतरी के लिए क्या-क्या यत्न किये हैं।"

देवात्मा

बगैर शुभ यत्न करने के किसी का निष्कासन आम करके नीच घृणा का ही प्रकाश है। आज कल चल रहे साथी सेवकों के सम्बन्ध में मुबारक पाठ विचार के दिनों में हमें अपने आपस के सम्बन्ध में अधिक से अधिक मिठास उत्पन्न करके एक दूसरे को मुहब्बत व प्यार की आंखों के साथ देखने की जरूरत है, जो ऐसा कर सकेगा, वह ही गुरु का होगा। जो ऐसा नहीं कर सकेगा। वह केवल अपने आप का ही होगा।

(बलदेव सिंह)

स्वास्तित्व यज्ञ क्या है?

नेचर में हर चीज़ का अपना अस्तित्व है। और प्रत्येक अस्तित्व दो ही वस्तुओं से बना है। एक जड़ और दूसरा शक्ति। वह अस्तित्व चाहे भौतिक जगत के हों, पशु जगत के हों, वनस्पति जगत के वा मनुष्य जगत के हों। यहां यह नियम अटल है कि नेचर का प्रत्येक अस्तित्व जड़ और शक्ति से संयुक्त है, वहां यह भी अटल सच्चाई है कि जड़ और शक्ति में परिवर्तन होता है, इसलिए प्रत्येक अस्तित्व परिवर्तन के नियम के अधीन है। यह परिवर्तन दो ही प्रकार का है एक विकास और दूसरा विनाश। प्रत्येक अस्तित्व या तो पहले से बेहतर हो रहा है या बिगड़ रहा है।

स्वास्तित्व का अर्थ मनुष्य का अपना अस्तित्व है जो शरीर और आत्मा अर्थात जीवनी शक्ति से बना है। हमें शरीर की तो कुछ समझ है, परन्तु आत्मा सूक्ष्म है। शक्ति होती ही सूक्ष्म है, वह दिखाई नहीं देती परन्तु उसके कार्य दिखाई देते हैं जैसे बिजली की शक्ति है, उसे हम देख नहीं सकते, परन्तु उससे हमारे घरों में कितने उपकरण चलते हैं, यह बिजली की शक्ति के लक्षण हैं। उसी प्रकार आत्मा दिखाई नहीं देता, परन्तु उसकी शक्तियां शरीर वा मानसिक चिन्ताओं वा क्रियाओं द्वारा अपने आपको प्रदर्शित करती हैं। क्योंकि शरीर दिखाई देता है इसलिए उसकी सेहत, उसके रोगों वा उनसे बचाव का अपनी योग्यता अनुसार हम संग्राम करते हैं। अब शरीर के विषय में, यह अन्धविश्वास साधारणत: दूर हो चुका है कि नमाज पढ़ने, मत्था टेकने, नाम जपने, अरदास करने या माता को मानने से रोग दूर होता है। यह विश्वास पक्का है कि डाक्टर ही उसका सही ईलाज कर सकता है। फिर भी लोग पूजा पाठ करते हैं, कई प्रकार की देवियों को पूजते हैं, परन्तु दवाई डाक्टर से ही लेते है।

जैसे शरीर के सम्बन्ध में उसके रोगों के सम्बन्ध में मिथ्या विश्वास रखकर और शरीर सम्बन्धी रोगों को किसी देवी देवता द्वारा भेजा हुआ जानकर उसी की अराधना की जाती थी, परन्तु विज्ञान के विकास ने इस भ्रम को दूर कर दिया है। रोगों के कारण और उन कारणों के ईलाज ढूढ़े गए हैं। शरीर का बोध किसी सीमा तक मनुष्य को है परन्तु वह अवस्था आत्मा के सम्बन्ध में नहीं है। जैसे शरीर के सम्बन्ध में अन्धेरा था, उसी प्रकार आत्मा के सम्बन्ध में अब भी घोर अन्धकार है। आज भी वही पुरातन परिभाषाओं को माना जाता है जो विज्ञान की शिक्षा से पहले अलग अलग धर्म ग्रन्थों में लिखी गई थीं। वह सब परिभाषाएं प्रत्येक धर्म ग्रन्थ में अलग अलग हैं, जबकि वैज्ञानिक युग में हमें मानना पड़ता है कि हर क्षेत्र में प्रत्येक सचाई केवल एक होती है, तो आत्मा की परिभाषा भी एक होनी चाहिए। जैसे सारे संसार में शारीरिक विज्ञान एक है, तो आत्मा की परिभाषा अलग 2 कैसे हो सकती है? अब कोई बच्चा चाहे किसी धर्म को मानता हो, उसके माता पिता चाहे उसे अपने ग्रन्थों के अनुसार कोई शिक्षा देते हों, परन्तु स्कूल में उसे यही पढ़ना पढ़ता है कि पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूमती है। मनुष्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में चाहे धर्म ग्रन्थों के अनुसार यह मानते रहें कि इन्सान को परमात्मा, वाहेगुरू, अल्हा, ईश्वर ने पैदा किया है, परन्तु स्कूल की परीक्षा पास करने के लिए यह मानना पड़ेगा कि मनुष्य का विकास पशु जगत की एक विशेष प्रजाति से हुआ है। विज्ञान परीक्षा के द्वारा हर सचाई को स्थापित करता है। विज्ञान में नेचर के नियमों और घटनाओं को जानकर ही तरह 2 के

अनुसन्धान सम्भव हुए हैं।

परम पूजनीय भगवान ने विज्ञान का अध्ययन करके आत्मा की विज्ञान मूलक परिभाषा दी है :-

आत्मा क्या है?

आत्मा एक शक्तिमय जिन्दा अस्तित्व है, वह कई प्रकार की शक्तियां रखता है, अर्थात शरीर निर्माणकारी, पालनकारी, शासन करने वाली, जिन्दा रखने वाली एक से अनेक होने वाली, **दूसरी** आरम्भिक बोध शक्तियां, नाक, कान, आंख आदि। **तीसरी** मानसिक ज्ञानदायनी शक्तियां, **चौथी** सुखों, दुखों के बोध वा आकर्षण वा विकर्षण, **पांचवी** सात्विक शक्तियां। जीवनी शक्ति माता के गर्भ में अपने लिए शरीर का निर्माण करती है। और लगभग 9 महीने में पूर्ण शरीर का निर्माण करके मां के प्रसव के द्वारा इस पृथ्वी पर आती है, उसी जीवनी शक्ति को आत्मा कहते हैं। आत्मा और शरीर का अकाट्य सम्बन्ध है। आत्मा शरीर के बिना जिन्दा नहीं रहता और शरीर आत्मा के निकल जाने से मुर्दा हो जाता है। जीवनी शक्ति वा आत्मा मृत शरीर से निकलने के बाद अपने लिए पहले शरीर के अनुरूप परन्तु सूक्ष्म नया शरीर बुनती है। यह अलग नियम है कि वह शरीर उसके पहले जिन्दा शरीर में रहने के समय मनुष्य की उच्च वा नीच गतियों के अनुरूप ही सूक्ष्म सैल लेकर अच्छा वा अधूरा शरीर बनाती है।

आत्मा जीवनी शक्ति है। शक्ति अपने लक्षणों द्वारा पहचानी जाती है। हम जो चिन्ताएं वा गतियां करते है, वह शरीर के द्वारा आत्मा की शक्ति ही करवाती है। आत्मा शक्तियों का समूह है। जिन्हें हम भाव शक्तियां कहते हैं। मानसिक शक्तियां भी आत्मा का ही अंग हैं।

जैसे हमें शरीर के अंगों, उनके रोगों और उनके उपचार की आवश्यकता है, वेसे ही आत्मा की शक्तियों को जानने की आवश्यकता है, क्योंकि वही हमारी परिचालक शक्तियां है। मनुष्य को कोई परमात्मा, वाहेगुरू अल्हा वा खुदा नहीं चलाता, बल्कि जैसी भाव शक्तियां हमें विरासत में अपने पूर्वजों से मिली हैं, वही हमसे अच्छी वा बुरी गतियां करवाती हैं, जैसे वातावरण में हम वास करते हैं, वह अवश्य हमारी चिन्ताओं और क्रियाओं को प्रभावित करता है।

हमारा विकास पशु जगत से हुआ लेकिन हमारी विकासशील मानसिक शक्तियों ने हमें उनसे श्रेष्ट बना दिया। पशुओं से जो मूल प्रकृति हमें मिली है वह है सुख अनुराग। हमें हमारे सुख अनुराग की शक्तियां चलाती है, वह सुख किसी को नशे में मिले, धन की अधिक प्राप्ति में मिले, काम वासना की तृप्ति के लिए चाहे बलात्कार से मिले, धन के लालच में चाहे रिश्वत, बेईमानी, धोखाधड़ी, किसी का अपहरण करने से अपने सगे से सगे सम्बन्धी का खून करने में मिले, धर्मान्धता में दूसरों को तबाह व बरबाद करने में मिले, किसी की निन्दा चुगली करने में, ईर्षा वा द्वेष के वश में किसी को हानि पहुँचाने में, कोई पद, पोज़ीशन लेने के लिए तरह 2 के षड़यन्त्र, झूठ फरेब करने में मिले, मनुष्य ऐसे सुख प्राप्त करने में ही खुशी वा तृप्ति ढूढ़ता है। उनसे कितनी भी हानि हो परन्तु वह अपनी नीच शक्तियों के द्वारा ऐसी क्रियाएं करने के लिए बेबस है।

मनुष्य के भीतर इन नीच सुखों की शक्तियों के साथ 2 किसी किसी जन में किसी मात्रा में दूसरों के दुखों को समझने, उन्हें दूर करने वा और प्रबल होने पर दूसरों के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने में भी सुख मिलता है, यह सात्विक वा उच्च शक्तियां है। मनुष्य अच्छी वा बुरी गतियां करता सुख प्राप्ति के लिए ही है, परन्तु सौभाग्यवान हैं वह जन जो उच्च गतियों में सुख प्राप्त करते हैं।

इन्हीं अच्छी या बुरी शक्तियों के अधीन मनुष्य जितनी भी चिन्ताएं वा गतियां करता है, वह या तो विकसित होता है या विनाश को प्राप्त होता है। हर क्षण हमारे शरीर की तरह आत्मा परवर्तित होता है। उसकी चिन्ताओं वा गतियों के अनुसार उसके सूक्ष्म सैल बनते रहते हैं जो मरने के बाद उन्हीं सैलों के अनुसार बढ़िया वा घटिया शरीर बनाता है।

दुनिया में विश्व का ज्ञान बढ़ रहा है, शारीरिक रोगों के लिए अधिक से अधिक अनुसन्धान हो रहे हैं, परन्तु मनुष्य में उसकी जीवनी शक्ति जो सार वा मूल वस्तु है, उसका कोई ज्ञान नहीं, इसीलिए दिन पर दिन घरों में, समाजों में, विश्व में जहन्नुम पैदा हो रहा है। जब तक मनुष्यों को उनकी शक्तियों का ज्ञान नहीं होगा, तो यह नर्क बढ़ता जाएगा, चाहे सुख सुविधाएं कितनी भी प्राप्त हो जाएं। शारीरिक रोगों की तरह नीच शक्तियां आत्मा के रोग हैं।

आत्मा के सम्बन्ध में भगवान देवात्मा स्वास्तित्व यज्ञ पर अपने एक उपदेश में जो 'लेख और उपदेश पुस्तक' में दर्ज है, फरमाते हैं :-

शरीर के विषय में तो लोग जानते हैं कि शरीर के लिए बचपन का समय, जवानी का समय और बुढ़ापे की और बढ़ने का समय है, परन्तु आत्मा को छोड़ देते हैं शरीर के लिए तो यह नियम माना जाता है कि उसकी मृत्यु होती है परन्तु आत्मा की मृत्यु नहीं मानी जाती। विश्वव्यापी जो नियम हैं, उसको आत्मा से अलग कर देते हैं। केवल इसलिए कि आत्मा के विषय में जो कुछ उनका ज्ञान, जो कुछ उनका धर्म, जो कुछ उनका परलोक, जो कुछ उनका नर्क, वह सब कल्पना मूलक है। देव धर्म की शिक्षा कल्पना मूलक नहीं, वह विज्ञान मूलक है। मनुष्य के अस्तित्व के विषय में जो विज्ञान मूलक नियम हैं, वह उन पर स्थापित है। यह इस पृथ्वी के लिए बिलकुल नई ज्योति है। किसी ने आत्मा के सम्बन्ध में ऐसा ज्ञान पहले नहीं दिया। जिन्होंने आत्मा को माना है, उसे अविनाशी माना है, इसलिए उनके सम्मुख विनाश और विकास के दोनों नियम नहीं आए। यदि कोई आत्मा विनाशकारी नियमों के अधीन है, यदि उसकी गति नीच गति है तो चाहे वह कुछ ही मानता रहे, वह (आत्मा) अवश्य ही मर जाएगा। यदि किसी के भीतर रोग है, वह उसको माने या न माने, यदि वह दूर न हो तो अवश्य उसका विनाश कर देगा। इसलिए इस सत्य से वंचित रहकर विनाश और विकास के नियमों को न पहचान कर सैंकड़ों आत्मा विनष्ट हो रहे हैं - यदि आत्मा अपनी अवस्था में सात्विक भावों को प्राप्त नहीं होता, उसके भीतर उच्च गति आरम्भ नहीं होती, उसका विनाश होना अवश्यम्भावी है।"

आत्मा अति सूक्ष्म, शक्तिमय जीवित अस्तित्व है। उसके सम्बन्ध में यह ज्ञान प्राप्त करने की परम आवश्यकता है कि :- (1) आत्मा है क्या? (2) उसकी बनावट या गठन क्या है? (3) उसके रोग क्या हैं? (4) उसका पतन वा नाश क्या है? (5) उसकी रक्षा और विकास क्या है?

इन विषयों का मानसिक ज्ञान यथेष्ट नहीं, वह बुद्धिमान वा शिक्षित वा कुछ वैज्ञानिक गहरी विचारधारा रखने वाले जन समझ सकते हैं और बता सकते हैं, मगर इन विषयों के प्रकृत बोध के बगैर ज्ञान निरर्थक रहता है और हानि होते रहना आवश्यक है। जैसे सुबह की सैर सब व्यायामों की रानी कही जाती है, इसका मानसिक ज्ञान काफी नहीं, सैर किए बिना हमारे शरीर को लाभ नहीं पहुँच सकता। इस प्रकार आत्मा का केवल ज्ञान प्राप्त करना ही काफी नहीं, उसका बोध परम आवश्यक है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा फरमाते हैं :-

(1) मनुष्य होकर जो जन अपने ही अस्तित्व के

विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने की कोई अकांक्षा नहीं रखता, उससे बढ़कर और कृपा पात्र कौन हो सकता है।

(2) मनुष्य होकर किसी जन के लिए अपने अस्तित्व - विशेषकर अपने आत्मा के विषय में सत्य बोध वा सत्य ज्ञान लाभ करने का अकांक्षी होने से बढ़कर और कोई बड़ा अधिकार नहीं, क्योंकि उससे नीचे पशु जगत के किसी जीव को भी अपने अस्तित्व के विषय में इस प्रकार के ज्ञान लाभ करने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं

अब प्रश्न यह है कि आत्मा का ज्ञान वा बोध कहां से प्राप्त हो सकता है, यह ज्ञान आत्मिक विज्ञानी ही देने में सक्षम है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने विज्ञान के आधार पर आत्मा के सत्य और तत्व खोजे हैं। वह अध्यात्मिक विज्ञानी हैं। उनके भीतर ऐसी रोशनी का प्रकाश हुआ है, जिसमें मनुष्य मात्र को यह ज्ञान वा बोध प्राप्त हो सकता है, उस रोशनी ने ही कल्पित आत्मा की परिभाषाओं को तिलांजली देकर आत्मा की विज्ञान मूलक परिभाषा दी है। इसलिए उनके देवरूप के साथ सम्बन्ध स्थापित करके ही यह रोशनी प्राप्त हो सकती है और अपनी 2 योग्यता के अनुसार अधिकारी आत्मा - अपने 2 आत्मा की शक्तियों का बोध प्राप्त कर सकते हैं।

(सुरजीत बराड़)

विशुद्ध परोपकारी और स्वार्थपरायण मनुष्यों के जीवन में अन्तर

जैसे विष या मिट्टी खाने से मनुष्य का शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ता है और दूध, फल आदि के ठीक सेवन से वह बेहतर बनता है, वैसे ही स्वार्थपरता का जीवन व्यतीत करने से मनुष्य का आत्मिक जीवन बिगड़ता और नष्ट होता है और विविध संबंधों में कई प्रकार से निष्काम सेवाकारी बनने से उसका जीवन उसकी अपनी योग्यता के अनुसार बेहतर बनता और उन्नत होता है। इस विषय में भगवान देवआत्मा के दो वचन नीचे दिए जाते हैं -

नेचर का यह अटल नियम है कि जो मनुष्य स्वार्थी या स्वार्थपरायण होते हैं, वह नेचर के विकास के अटल नियम के अनुसार दिनों - दिन आत्मिक पतन की ओर जाते हैं।

तुम इस तत्व को अच्छी तरह जानो और पहचानो कि तुम्हारे आत्मा की रक्षा और उन्नति औरों की निष्काम भलाई पर निर्भर करती है।

उपरोक्त दोनों वचन बहुत अच्छी तरह इस सच्चाई को प्रगट करते हैं कि मनुष्य के लिए स्वार्थपरता का जीवन पतनकारी और विनाशकारी है और निष्काम भलाई का जीवन विकासकारी और कल्याणकारी है।

क्या भौतिक जगत, क्या उद्भिद् जगत, क्या पशु जगत और क्या मनुष्य जगत के घटिया और बढ़िया दर्जे के अस्तित्व अपने - अपने रूप और अपने - अपने फलों से उपरोक्त सच्चाईयों को डंके की चोट से प्रगट कर रहे हैं?

नेचर में स्वार्थी और विशुद्ध परोपकारी जनों के जीवन में जो अलग - अलग प्रकार के कई लक्षण या फल पैदा होते हैं, उनमें से कुछ लक्षण या फल नीचे दिए जाते हैं।

(1) प्रत्येक मनुष्य स्वभावत: सुख का प्रबल आकांक्षी है और दुख से घबराता है। परन्तु स्वार्थ परायण मनुष्य के लिए बहुत बड़ी कठिनाई यह है कि वह अपने किसी सेवा के बदले जो सुख चाहता है,

उसके बदले वह धन, मान, इज्जत व पद आदि की आकांक्षा करता है, वह सब कुछ औरों के हाथ में है। उसकी खुशी का सामान अधिकतर उसके अपने अस्तित्व से बाहर के सामानों और बाहर के अस्तित्वों में है और उसका वह सुख उनके चले जाने, पत्नी या संतान के मर जाने, किसी पद के छिन जाने, किसी की ओर से अपमानित होने से नष्ट हो जाता है। परन्तु इसके विरुद्ध जिस मनुष्य को दूसरों की निष्काम सेवा या भलाई में सुख मिलता है, उसका सुख उसके बाहर के जनों के हाथ में नहीं है, बल्कि उसके अपने आत्मा के भीतर ही है। श्रद्धा, कृतज्ञता, दुख निवारण या अभाव निवारण आदि सात्विक भावों से परिचालित होकर जो जन किसी की भलाई करता है, उसके बदले में वह सुख लाभ करने के लिए किसी और अस्तित्व का मोहताज नहीं है, बल्कि उसके सुख का सामान उसके अपने अन्दर ही है। इसी प्रकार स्वार्थ परायण मनुष्य के दुख का सामान उसके अपने अन्दर है और निष्काम सेवाकारी मनुष्य के दुख का सामान अधिकतर और नीच आत्माओं के व्यवहार में है। जो स्वार्थ परायण मनुष्य ईर्ष्या या घमंड या मोह या क्रोध के कारण दुख पा रहा है, उसे कोई दूसरा मनुष्य चाहे कुछ भी तकलीफ न दे तो भी अपनी ऐसी बुरी प्रकृति के कारण अपने आप में स्वयं दुखी रहेगा और उस दुख से अपनी जीवनीशक्ति का नाश करता रहेगा। वह अकेला होकर भी उच्च शांति लाभ नहीं कर सकेगा और इसके विरुद्ध जो जन निष्काम सेवाकारी है, वह स्थूल शरीर छोड़ने पर नीच आत्माओं की पहुंच से ऊपर चला जाएगा और इसलिए उनके बुरे बर्तावों के दुख से सुरक्षित हो जाएगा। ऐसी अवस्था में वह अपने उच्च भावों के कारण बहुत उच्च शांति की अवस्था में रहेगा। स्वार्थ परायण मनुष्य के सुख का सामान अधिकतर औरों के हाथ में है और निष्काम सेवाकारी जन के सुख का सामान अधिकतर उसके अपने ही हाथ में है और दुख का सामान औरों के अन्दर है कि जिस दुख से वह समय आने पर नीच आत्माओं से जुदाई की हालत में अवश्य मोक्ष पा सकता है।

(2) प्रत्येक मनुष्य जीना चाहता है और मरना नहीं चाहता, परन्तु स्वार्थी मनुष्य नेचर के जीवन विषयक नियम के विरुद्ध जीने के कारण अपनी उक्त जीने की आकांक्षा को ठीक तरह पूरा नहीं कर सकता और वह स्वभाविक आयु से पहले ही इस दुनिया में या अगली दुनिया में मर जाता है। निष्काम सेवाकारी मनुष्य नेचर के जीवन विषयक नियम को पूरा करने के कारण अधिक से अधिक काल तक जीने के योग्य बन जाता है। ऐसा जन यदि किसी कारण से इस दुनिया में जल्दी अपने स्थूल शरीर को छोड़ने के लिए मजबूर हो तो उसके बाद सिवाय किसी विशेष दुर्घटना के उच्च प्रकार का सूक्ष्म शरीर लाभ करके चिरकाल तक जीने के योग्य बन जाता है।

(3) स्वार्थी मनुष्य के जीवन का दायरा बहुत तंग होता है और निष्काम सेवाकारी जन के जीवन का बहुत अधिक होता है। जो जन औरों को हानि पहुंचाकर जीना चाहता है, उसे जहां कहीं अपने से अधिक शक्तिशाली अस्तित्वों से वास्ता पड़ेगा, वहां पर वह उसे खत्म करना चाहेगा और ऐसा अस्तित्व मरने के बाद किसी अच्छे लोक में नहीं जा सकेगा और उसके जीवन का क्षेत्र दिनों-दिन तंग होता जाएगा और आखिरकार वह इसी हालत में चलते-चलते बिना आई मौत का शिकार हो जाएगा। परन्तु इसके विरुद्ध जो मनुष्य निष्काम सेवाकारी होता है, उसके लिए क्या इस दुनिया में और क्या अगली दुनिया में सेवा के लिए जो क्षेत्र होता है, वह बहुत बड़ा और असीम होता है। संतान अनुरागी के लिए अब उसका क्षेत्र सीमित है कि सन्तान की सेवा करके वह जीना चाहता है और उनके न रहने से उसकी सेवा और क्षेत्र

का सामान समाप्त हो जाता है, परन्तु निष्काम उच्च सेवा करने के आकांक्षी जन के लिए ऐसे जन प्रत्येक स्थान पर वर्तमान हैं कि जिनकी सेवा करके वह जीता रह सकता है।

(4) स्वार्थी मनुष्य अपने आत्मिक जीवन के विचार से दिनों-दिन अधिक से अधिक रोगी, पागल, दुखिया और दुर्बल होता चला जाता है और आखिरकार अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के विचार से पूर्णत: खत्म हो जाता है। परन्तु परोपकारी जन दिनों-दिन अधिक से अधिक ज्योर्तिमान, सुन्दर और बलवान बनकर श्रेष्ठ सुखों का भागी होता चला जाता है और अधिक से अधिक देर तक जीने के योग्य हो जाता है।

(5) स्वार्थी मनुष्य मरने के बाद ऐसे जनों में ही रहने का अवसर पाता है कि जो उसकी तरह स्वार्थी होते हैं, इसलिए ऐसी अवस्था में वह जहां अपने नीच भावों की आग में जलता रहता है, वहां दूसरे नीच अस्तित्वों के भयानक बुरे व्यवहारों से भी कई प्रकार के अनुचित दुख पाता रहता है। निष्काम सेवाकारी जन मरने के बाद ऐसे मनुष्यों में जाकर वास करने का अधिकारी होता है कि जो परोपकारी होते हैं और इसलिए ऐसा मनुष्य अपने उच्च जीवन की अमूल्य बरकतों से मालामाल होता है, वहां औरों के श्रेष्ठ जीवन के उच्च व्यवहारों से भी बहुत बड़ा लाभ उठाता है।

(6) स्वार्थी मनुष्य इस दुनिया में एक ऐसा बुरा दृष्टांत छोड़ जाता है जो क्या उसके निकट के सम्बन्धियों और क्या अन्य जनों की तबाही में सहायक होता है और परोपकारी जन क्या उसके सम्बन्धियों और क्या अन्य जनों की भलाई में सहायक बनने का दृष्टांत छोड़ जाता है और इस प्रकार स्वार्थी मनुष्य को मरने के बाद औरों की ओर से बुरी आशीष मिलती रहती है और परोपकारी जन को शुभ आशीष।

(7) स्वार्थी जैसे और किसी जन का सच्चा शुभचिंतक नहीं होता और नहीं हो सकता, वैसे ही अपना भी शुभचिंतक नहीं होता और नहीं हो सकता, किन्तु वह जैसे औरों का दुश्मन होता है, वैसे ही अपना भी शत्रु होता है, परन्तु इसके विरुद्ध निष्काम सेवाकारी जन जैसे औरों का भला चाहता है और करता है वैसे ही अपना भी भला चाहता और करता है। अनेक अवस्थाओं में वह अपने शत्रुओं के लिए भी हितकारी प्रमाणित होता है, जबकि इसके विरुद्ध स्वार्थी मनुष्य अनेक अवस्थाओं में अपने उपकारियों को भी हानि पहुंचाने से नहीं रुकता।

(8) जहां स्वार्थी मनुष्य को अपने मरने के समय कई प्रकार के अनुचित दुख उठाने पड़ते हैं और शोक से हाथ मलने पड़ते हैं, वहां परोपकारी जन को ऐसे दुख नहीं उठाने पड़ते बल्कि वह शांति के साथ इस अधम दुनिया को छोड़ कर किसी उच्च लोक में जाता है।

तब प्रिय पाठकगण, आप देखें कि स्वार्थी और विशुद्ध परोपकारी जनों के जीवनों के नतीजे में कितना ज़मीन-आसमान का अन्तर है। जो जन इस सच्चे अन्तर को भगवान देवआत्मा की ज्योति में देखने की योग्यता रखते हों, उनके लिए इस बात की नितांत आवश्यकता है कि वह यदि अभी तक स्वार्थपरता का जीवन व्यतीत करते हैं, तो वह शीघ्र स्वार्थपरायण अवस्था से उद्धार लाभ करें और विशुद्ध परोपकार अनुरागी बनने के लिए सच्चा फिकर और संग्राम करें और समय रहते-रहते परोपकार के जीवन की उच्च अवस्था को लाभ करके और भगवान देवात्मा के साथ उन्नतशील सम्बंध में बंध कर आत्मिक भलाई का मार्ग खोल सकें, वरना समय व्यतीत हो जाने पर उनकी कुछ पेश नहीं जाएगी और उनके लिए केवल अत्यन्त हानिकारक दुखों की आग में जल-जल कर खत्म होना बाकी रह जाएगा।

(सत्यदेव संवाद 11 जून 1940)

देव ज्योति में ही हमें अपनी उल्टी दृष्टि का बोध होता है।

मेरे भगवन्!

कुछ समय से मैं प्राय: प्रतिदिन अपने निज के साधन में 'मनुष्यात्मा के संबंध में चार महा तत्व' नामक अति मूल्यवान पुस्तक का पाठ करता रहा हूं। मैंने उस अध्याय का बार बार पाठ किया है जिसमें नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से उत्पन्न महा भयानक फलों का वर्णन है। इनमें से एक है उल्टी दृष्टि। यह फल उतना ही सच है जितना यह भयानक है। इस प्रकार के कुछ तजरुबे मैं अपने और दूसरों के जीवनों से नीचे लिखता हूं-

1. माता के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि

मेरी बहुत छोटी सी आयु में मेरे पिता जी का देहांत हो गया था। मेरी माताजी ने हमें पालने में बहुत संग्राम किया। आपकी अद्वितीय रोशनी प्राप्त करने से पहले मेरे दिल में विषैला विचार उठता था। जब मैं अपने कमाए हुए पैसों से उनकी सहायता करता, तो मैं यह समझा करता कि मैं अपनी माता पर एहसान कर रहा हूं। आपकी रोशनी में मैं अनुभव करता हूं कि यह भाव कितना गलत था। मैं माता के ऋण को अपनी तुच्छ सी सेवाओं से कैसे उतार सकता था? उन पर कोई मेहरबानी करने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। मुझे आपने एक भयानक उल्टी दृष्टि से बचा लिया।

जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था तो मेरी माननीय माता जी को किसी दूर के स्थान में एक भारी बंडल ले जाना था। उन्होंने मुझे ऐसा करने के लिए कहा। बंडल उनके लिए बहुत भारी था और हमें अन्य कोई सहायता प्राप्त नहीं थी, इसलिए वह मुझे ले जाना पड़ा। लेकिन सारा रास्ता मैं उनके प्रति कठोर शब्द बोलता रहा और बुड़बड़ाता रहा। इसका कारण यह नहीं था कि मैं बंडल उठा नहीं सकता था। इसका कारण तो यह था कि मैं समझता था कि मैं ऐसा काम करके लोगों की नज़रों में छोटा बन जाऊंगा। यह मेरी शोचनीय उल्टी दृष्टि थी। आपकी रोशनी से वंचित होने के कारण मैं नहीं देख सका कि मेरी माता को मदद की जरूरत है, वह माता जिसने मेरी इतनी बड़ी सेवा की है। मैं इस धोखे में रहता था कि सारे संसार की आंखें मेरी ओर लगी हुई हैं, मानो दुनिया को अन्य कोई काम ही नहीं। और यह मान भी लिया जाए कि लोग मेरी कल्पना के अनुसार ही सोचते होंगे, तो भी मैं कोई पाप तो नहीं कर रहा था। हाय! मेरी कैसी भयानक अवस्था कि मैं नीच दुनियादारों की ओर से कुछ प्रशंसा के खोखले शब्द न मिलने के डर से अपनी माता की भी सहायता न करूं।

2. अध्यापकों के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि

जिस संगत में मैं रहता था, उसने मुझे यह सिखाया कि अध्यापकों का अपमान करना एक अच्छी बात है। जब मैं कालेज में गया, तो मुझे बताया गया कि कालेज का विद्यार्थी तो एक स्वतंत्र पक्षी है और उसे यह अधिकार है कि जो प्रोफेसर उसकी आज़ादी में दखल दे, उसे उसका मज़ा चखाए। मेरे भीतर यह विश्वास भरा गया कि जमात में प्रोफेसर की हंसी उड़ाना या उसकी पीठ पीछे उसका मखौल उड़ाना एक आज़ाद कालिजिएट की निशानी है। अपने दिनों में मैंने भी कुछ अध्यापकों का अपमान किया, उनकी आज्ञा के विरुद्ध हरकतें कीं और प्रोफेसरों का मखौल उड़ाने में दूसरों का साथ दिया। अब यह सारी अवस्था मुझे एक भयानक उल्टी दृष्टि मालूम होती है।

आपकी देव ज्योति पाने के बाद कालेज में ही मेरा व्यवहार बदल गया। परन्तु बीते जीवन के दुखदाई धब्बे मेरी आत्मा पर वर्तमान हैं और मैं उन दिनों को याद करके रोता हूं जब मैं ऐसे विषाक्त

प्रभावों से घिरा हुआ था। आपकी ही देव ज्योति में मुझे दिखाई दिया कि मेरे अध्यापक मेरे उपकारी थे। कालेज के दिनों में जब मुझे आपकी शरण मिल चुकी थी तो जिन अध्यापकों का मैंने अपमान किया था, उनमें से एक वहां आए जहां मैं पढ़ता था। तब मैंने उनके सम्बन्ध में अपनी नीच गतियों का अपने उस समय की योग्यता के अनुसार यथा सामर्थ्य परिशोध किया। अध्यापक दंग रह गए और उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम्हारे अन्दर यह आश्चर्यजनक परिवर्तन कैसे आ गया? मैंने उन्हें देव समाज के द्वारा अपने जीवन में आए परिवर्तन की कथा सुनाई।

3. आत्मिक उपकारी के संबंध में दुश्चिन्ताएं

जब मेरे अंहकार के नीच अनुराग पर चोट लगती है तो मेरी निगाह उल्टी हो जाती है। मुझे श्री भाई साहिब भाई मोहन देव जी के सम्बन्ध में एक घटना याद है। यह बम्बई की बात है, जबकि मैं कालेज के वातावरण से विषाक्त था। मैं क्षुद्र प्रकार की बातें करने लगा। उन्हें इससे दुख हुआ और तनिक कड़े शब्दों में मुझे समझाया। इस पर मैं उल्ट पुल्ट हो गया। कम से कम उस समय के लिए उनके सब उपकार मैं भूल गया और मैं उनके सम्बन्ध में दुश्चिन्ताएं करने लगा। कैसी भयानक उल्टी दृष्टि! वह मेरे महान उपकारियों में से एक थे, जिन्होंने मुझे उस समय समझाया जब मैं ग़लत जा रहा था, परन्तु मैंने उन्हें उस समय मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय करने वाला अनुभव किया।

4. अपने दोषों को मानने के सम्बन्ध में उल्टे विश्वास

जब मैं अपनी पुरानी बिरादरी और पुराने सम्बन्धियों और सोसाइटी के वातावरण में सांस लेता था, तो एक और विषैली धारणा मेरे दिल में प्रवेश कर गई थी, जिसने अब तक भी मेरे दिमाग से अपना अधिकार पूर्ण रूप से नहीं छोड़ा। वह उल्टी धारणा यह थी कि जो मनुष्य जीवन में सफल होना चाहता है, उसे अपने आप को दुनिया के सामने ठीक ठाक प्रगट करना चाहिए, चाहे उसके आत्मा को विनाश के कीड़े खा रहे हों। जीवन का मंत्र यह बना हुआ था, "जो मन में आए करो, परन्तु कानून की पकड़ में आने से सावधान रहो।" आपकी ज्योति में यह विश्वास कितना भयानक प्रतीत होता है। आपकी ज्योति दिखाती है कि चाहे मुझे कोई न भी देखे, तो भी मेरा आत्मा प्रत्येक नीच भाव, विचार और कार्य से नीच बनता है, और सोसाइटी में मुझे केवल उसी स्थान या पद की इच्छा करनी चाहिए जिसका मैं अधिकारी हूं। ऐसे मान यश की भूख नहीं रखनी चाहिए जिसका कि मैं अधिकारी नहीं।

उपरोक्त दूषित प्रभावों ने जो मैंने पुरानी सोसाइटी से प्राप्त किए, मुझे लम्बे काल तक अपने दोषों को देखने और देखने पर उन्हें मान लेने के अयोग्य बनाए रखा। उन्होंने मेरे भीतर झूठी प्रशंसा और बड़ाई की लालसा भी पैदा कर दी, चाहे मैं उसका अधिकारी न भी हूं। कैसी उल्टी दृष्टि।

5. झूठा दिखावा

मेरे प्रान्त के बहुत से विद्यार्थी जब कभी अपने प्रान्त से बाहर जाते, तो अमीरों की न्याई ठाठ-बाठ से पहनते, खाना खाते और रहते-सहते, चाहे उस फिजूलखर्ची के कारण मां बाप को दुखी दिन और बेचैन रातें काटनी पड़तीं। हमारे रहन सहन को देखकर वहां के विद्यार्थियों पर यह प्रभाव पड़ता कि यह राजकुमार हैं। हम अपने आपको बहुत बड़ा प्रगट करते। हमारे प्रान्त के एक भद्र पुरुष, जो प्रान्त के मुख्य नगर में रहते थे, हमारी ऐसी दशा को देखकर बड़े दुखी और निराश हुए और उन्होंने हमारा असली रूप दिखाते हुए एक पत्र अंग्रेजी दैनिक अखबार को लिखा। झूठी और बनावटी पोज़ीशन बनाए रखने की हानियों से बचाने की उनकी कोशिश का धन्यवाद

करने के स्थान पर मैंने और दूसरे विद्यार्थियों ने उन्हें बुरा-भला कहा और उन पर झूठे इलज़ाम लगाए।

आपकी ज्योति ने इस सम्बन्ध में मेरे दृष्टिकोण को बहुत बदल दिया है और आपकी शक्ति से मैं किसी सीमा तक दूसरों के सामने अपने आपको झूठ मूठ बढ़िया दिखाने की आदत को छोड़ने के योग्य हो गया हूं।

एक दिन मैं ज़िला मैजिस्ट्रेट-जो देव समाज के सम्पर्क से प्राप्त उच्च चरित के कारण मेरा बड़ा मान करते थे, के सामने गया। उसने मुझे कहा कि तुम्हारी आय प्रति मास कम से कम एक हज़ार रुपए तो होगी। यह बात ठीक न थी। मैं आपके विकासकारी प्रभावों के अधीन आ चुका था, इसलिए मैं वहीं और उसी समय बताए बिना न रह सका कि ऐसा नहीं है। परन्तु जब मैंने अपनी आत्म-परीक्षा की तो मैंने देखा कि उसका ऊंचा अनुमान चाहे गलत था, परन्तु मुझे ऐसा सुनना सुखदायक लगा और उसे गलत बताने के लिए मुझे ज़ोर लगाना पड़ा। मेरे सामने एक भारी सच्चाई प्रगट हुई। एक बात बिल्कुल झूठी थी, इसने मुझे खुश किया, क्योंकि उससे मेरे प्रशंसा अनुराग की तृप्ति हुई। और जब मैंने इसे ठीक किया और मैं सच्चाई पर चल रहा था, तो मुझे इसके लिए दिल पर ज़ोर देना पड़ा। कैसी उल्टी दृष्टि!

6. जीवन के लक्ष्य के विषय में उल्टी दृष्टि

उल्टी दृष्टि की सबसे भयानक अवस्था जो मुझे आपकी रोशनी में दिखाई देती है, वह यह है कि मनुष्य गौण या साधन मात्र बनने वाली वस्तुओं को मुख्य वस्तु समझे और उन्हीं को अपने जीवन का लक्ष्य माने। आपकी ज्योति इस बात को स्पष्ट रूप से दिखाती है, कि धन तभी लाभदायक हो सकता है जब हम इसे भलाई और विकास में सहायक बना सकें। अन्यथा यदि हम उसे ही अपना लक्ष्य समझकर उसके पीछे दौड़ेंगे, तो यह हमें अपना दास बना लेगा और हमारा पतन करेगा। मेरे सन्मुख अनेक मनुष्यों के-कुछ देव समाज के सभासदों के भी-दृष्टान्त हैं जो आपकी ज्योति से वंचित हैं और जो धन को केवल धन के लिए प्यार करते और कीमती समझते हैं। उन्हें इसकी प्राप्ति से वही सुख मिलता है, जो एक शराबी को शराब का एक के बाद दूसरा प्याला चढ़ाकर मिलता है। उन्माद की अवस्था उन्हें बहुत अच्छी लगती है, यद्यपि उनके पास पहले ही शेष सारे जीवन को इज्जत से निर्वाह करने के लिए काफी धन है, परन्तु वह उसके नशे को तोड़ नहीं सकते। यदि वह धन दौलत की सनक छोड़ दें, और अपने आत्मा की भलाई का फिक्र करें, तो वह अपने और दूसरों के लिए बहुत हितकर प्रमाणित हो सकते हैं। परन्तु वह तब तक ऐसा नहीं कर सकते, जब तक आपकी ज्योति और शक्ति उनके भीतर प्रवेश करने का अवसर पाकर इस अंग में भी उनके भीतर शुभ परिवर्तन नहीं ला देती जैसा कि उनके जीवन के अन्य अंगों में उच्च परिवर्तन आया है।

वह आत्मा जो आपके देव प्रभावों के द्वारा इस धन-मोह से उद्धार पा चुके हैं। जानते हैं कि एक समय था जब वह इस भयानक उल्टी दृष्टि के शिकार थे।

एक बड़े खानदान का एक नौजवान ग्रेजुएट डाक्टर बनना चाहता था। जब उसे डाक्टर बनने का कारण पूछा गया, तो उसने कहा "इसलिए कि लोग मेरी एक मूर्ति नगर के एक गेट के नजदीक खड़ी करें।" उससे प्रश्न किया गया कि लोग तुम्हारा बुत्त क्यों बनाएं? उसने उत्तर दिया कि मैं लोगों की सेवा करूंगा और दान दूंगा।

यह उल्टी दृष्टि की एक विचित्र घटना है। वह लोगों में नाम पाने के लिए दूसरों की सेवा करना और धन कमाना चाहता था। जीवन के लक्ष्य के

विषय में कैसी उल्टी दृष्टि।

परन्तु आपकी शक्ति ने उसे बदल दिया और उसने धन कमाने वाले सब काम छोड़ दिए और अब वह वर्षों से देव समाज में मिशनरी के रूप में काम कर रहा है।

इस अंग में मेरी अपनी उल्टी दृष्टि भी बड़ी सीमा तक दूर हो गई है। मैंने भी हर अच्छे या बुरे ढंग से धन इकट्ठा करना अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था, ताकि मैं ऊंचे सामाजिक सम्बन्ध और सांसारिक पदवी प्राप्त कर सकूं। जीवन के बारे में कैसा अन्धकार और कितना क्षुद्र लक्ष्य! आपने अपने देव प्रभाव संचार करके मेरी दृष्टि बदलने और मुझे बचाने की कृपा की।

आप की महान ज्योति में मैं देखता हूं कि मुझे उल्टी दृष्टि से बचाने के लिए आपकी देव ज्योति और आपके देव तेज से बढ़कर कोई चीज़ कारगर नहीं। दूसरे शब्दों में मेरी दृष्टि ठीक रखने के लिए आपके देव प्रभावों से बढ़कर किसी चीज़ पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मुझे कड़वा तजरुबा है कि जब मैं अपने ऊपर निर्भर करता हूं तो मेरी दृष्टि उल्टी हो जाती है और मैं जीवन का उच्च मार्ग देखने के अयोग्य हो जाता हूं। उच्च जीवन के श्रेष्ठ मार्ग को देखने और उस पर चलने के बिना मैं सुरक्षित नहीं। मैं महसूस करता हूं कि जब मेरे हृदय पर आपका सबसे बढ़कर अधिकार होगा और केवल आपके देव रूप की ओर मेरा दिल आकृष्ट होगा, तब मेरी जीवन यात्रा सबसे बढ़कर सफल होगी।

काश! यह अति कंगाल और तुच्छ हृदय आपके अद्वितीय देव प्रभावों को ग्रहण करे और इस संसार के पतनकारी प्रभावों से अपनी रक्षा कर सके।

(पी.वी. कनल)

भजन

ज्ञानी होना हो जो सम्भव, अपने को पहचानेंगे;
अपने प्रति अज्ञानी रहकर, ज्ञानी नहीं कहलाएंगे।
क्या है यह अस्तित्व अपना, जो बदलता रात दिन;
किस गति की दिग है जाता, तत्त्व उसका जानेंगे।
हो यह जीवन नष्ट कब, कैसे बचे पावे विकास;
सत्य जो जो इस विषय में, इनकी शिक्षा पाएंगे।
देह क्या और आत्मा क्या, उनमें है सम्बन्ध क्या;
मुख्य लक्ष्य और गौण क्या, यह तत्त्व सम्मुख लाएंगे।
जिससे हो जीवन की रक्षा, उच्च हो उसकी गति;
मुख्य होवे लक्ष्य पूरा, ऐसी इच्छा धारेंगे।
जिनकी ज्योति शक्ति पाकर, मोक्ष हो पावें विकास;
उनकी भक्ति करके सच्ची, उच्च बनना चाहेंगे।

आत्मिक सत्य ज्ञान की आवश्यकता और उपलब्धि

अमृत वर्षा By P.V. Kanal

प्रत्येक मनुष्यात्मा को आत्मिक सत्य ज्ञान और आत्मिक उच्च कल्याण की नितान्त आवश्यकता है। आत्मिक सत्य ज्ञान से क्या मुराद है? जो ज्ञान आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में हो और जो ज्ञान नेचर की सत्य घटनाओं और अटल नियमों पर स्थापित हो। अच्छी से अच्छी दलील देना आत्मिक सत्य ज्ञान नहीं है। एक एक वकील अच्छी से अच्छी दलील देकर एक सच्चे मुजरम को, जिसने सचमुच जुर्म किया हो, कैद से छुड़ा देता है और एक एक बेगुनाह को जिसने बिल्कुल जुर्म नहीं किया था, मुजरिम करार दे देता है, और उसको फांसी तक चढ़ा देता है। अच्छे से अच्छा दिमाग रखकर एक एक जन बहुत लायक तकरीर करने वाला समझा जाता है। परन्तु उसका यह मतलब नहीं है कि वह सत्य ज्ञान का आकांक्षी है।

अच्छी कोटि का दिमाग रखकर एक एक जन सत्य ज्ञान पा सकता है, परन्तु पाता नहीं। वह इसलिए कि मनुष्य सुख का दास है और सुख को लाभ करना चाहता है। यदि मिथ्या में उसको सुख मिलता है, तो मिथ्या के प्याले खूब गट गट पी जाता है, यदि सत्य ज्ञान से उसके सुख में विघ्न पड़ता है, तो सत्य ज्ञान का दुश्मन बन जाता है।

मनुष्य को जो प्रकृति प्राप्त है, वह प्रकृति सत्य के विरूद्ध है। यह प्रकृति सुखार्थी है, इस प्रकृति से नीच अनुरागों और नीच घृणाओं की उत्पत्ति होती रहती है। नीच अनुराग और नीच घृणा भाव सत्य के इस कदर विरोधी होते हैं, कि वह कई सूरतों में सत्य ज्ञान की आकांक्षा ही मार देते हैं, और मनुष्य को मिथ्या के भंवर में फंसाते रहते हैं।

आत्मा के सम्बन्ध में भगवान् देवात्मा ने जिन सत्यों और तत्वों का प्रकाश किया है, उनमें से एक कीमती सत्य यह है, कि मनुष्य की शारीरिक और मानसिक शक्तियों की परिचालिक भाव शक्तियां हैं। यदि वह भाव नीच अनुराग और नीच घृणाएं हैं तो वह हर समय ही मनुष्य को मिथ्या और बुराई की ओर ले जाएंगी। मनुष्य की बुद्धि, मनुष्य की विद्या और मनुष्य का तजरुबा यह तीनों ही नीच रागों और नीच घृणाओं की तृप्ति में काम आते रहेंगे। अब यह नीच राग और नीच घृणाएं मनुष्य को अन्धा बना देते हैं। इस अन्धता के कारण मनुष्य ऐसी गतियां करता रहता है, कि जिनसे उसके आत्मा का पतन तो होता ही है, परन्तु उसके साथ साथ वह कई बाह्यक मुसीबतों में भी बहुत बुरी तरह से फंस जाता है। एक स्टेशन मास्टर के सम्बन्ध में यह सच्ची घटना है कि उस स्टेशन पर रात के समय एक मुसाफिर गाड़ी से उतरा। उसके पास सैंकड़ों रुपये मौजूद थे और उसने कहीं दूर मंजिल पर जाना था। उसने स्टेशन मास्टर से मिलकर सलाह की कि मैं क्या करूं। मुझे दूर एक गांव में जाना है। स्टेशन मास्टर ने कहा कि कोई फिक्र न करो, तुम्हारे रुपये सेफ में रख दिये जायेंगे, और तुम चारपाई लेकर सो जाओ, सवेरे अपने घर को जा सकते हो। स्टेशन मास्टर के हृदय में लालच ने सिर उठाया और उसके दिमाग पर इस कदर काबू पा लिया कि उसने मुसाफिर के रुपये मारने का पक्का फैसला कर लिया कि मुसाफिर को कत्ल ही कर दिया जाए। उसने दो गुण्डों

को लालच देकर इस बात के लिए तैयार किया, कि एक दो बजे रात को इस मुसाफिर को कत्ल कर दें। गुण्डों ने मान लिया, कि हम ऐसा कर देंगे। स्टेशन मास्टर घर में जाकर सो गया। रात को प्राय: एक बजे स्टेशन मास्टर का लड़का किसी गांव से वापिस आया, उसने सोचा कि मैं पिता को इस समय रात को क्या जगाऊं, मैं मुसाफिर खाने में सो जाता हूं। उसने मुसाफिर को चारपाई से उठा दिया, कि मैं स्टेशन मास्टर का लड़का हूं, इस चारपाई पर मैं सोऊंगा, तुम कहीं और जगह सो जाओ। जिस समय रात को गुण्ड़े आए, तब उस चारपाई पर स्टेशन मास्टर का लड़का सोया था और मुसाफिर किसी और जगह जाकर सो गया था। गुण्डों ने स्टेशन मास्टर के लड़के का सिर काट दिया और स्टेशन मास्टर को उसका पता दे दिया, कि हमने आपका काम कर दिया है। आप खुद चलकर देख लें। ज्योंही स्टेशन मास्टर लालटेन लेकर उसको देखने के लिए गया, त्यों ही अपने बेटे का गला कटा हुआ देखकर कुछ बेहोश सा हो गया। अब लालच ने उसके आत्मा को नीच बनाया और पतित किया है, परन्तु उसके साथ साथ उसको बाह्यक सजा भी दे दी। कहा जाता है कि जो "दूसरों के लिए खड्डा खोदता है, वह उसमें खुद गिरता है।"

नीच अनुराग और नीच घृणाएं मनुष्यात्माओं को रोगी, पतित और कोढ़ी बनाते हैं, ऐसी अवस्था में वह अपने जीवन से सड़ांध निकालते रहते हैं। सड़ांध के असरों से एक पापी और दुष्ट अपने बहुत निकट के और प्यारे सम्बन्धियों के पतन का हेतु बनता है, यह सत्य बहुतों के सामने नहीं है। जब एक लालची पिता का बेटा खुद लालची बनकर अपने माता पिता को सताना शुरु कर देता है, तब वह लालची जन हैरान होता है। उसको कभी यह नहीं सूझता है कि मेरी आत्मिक सड़ांध से मेरा बेटा रोगी हो गया।

एक जन के जीवन की सच्ची घटना है कि वह व्यभिचारी था। वह अपनी पत्नी रखकर भी एक और स्त्री के साथ अनुचित सम्बन्ध में बन्ध गया। उसको अपनी पत्नी से बेवफा बनाया। इस दुष्ट जन को इस स्त्री के रिश्तेदारों ने दुखी होकर बहुत कुछ कहा, परन्तु वह मानता नहीं था। उस दुष्ट की आत्मिक सड़ांध से और गन्दे दृष्टान्त से हुआ यह कि एक दिन उसकी पत्नी उसके घर से किसी और दुष्ट जन के साथ भाग गई। वह बहुत रोया और चिल्लाया और अपना सिर पीटा। और थोड़े समय के लिए नीच गति से तोबा भी की, परन्तु उसका अपना घर उजड़ गया। क्या उस दुष्ट जन को यह कुछ बोध हुआ कि मेरे वजूद को चलाने वाले मेरे नीच भाव हैं। जिन नीच भावों ने मुझे पतित बनाया है, जिन भावों ने मुझे अन्धा बनाया है और मुझे अन्धा बनाकर मेरे जीवन से वह गतियां कराई हैं, जो मेरे लिए बहुत शर्मनाक हैं, और औरों के लिए हानिकारक हैं। और इससे भी अधिक अपने जीवन की सड़ांध से मेरे प्यारे सम्बन्धी मेरी पत्नी की आत्मिक मृत्यु हो गई। और मेरा घर भी उजड़ गया।

अब यदि मनुष्य को यह सत्य ज्ञान प्राप्त हो और उसकी उपलब्धि हो, कि मेरे हृदय के कुल नीच भाव न केवल मुझे अन्धा, कठोर और उल्टा दृष्टा बनाते हैं, किन्तु मुझसे ऐसी गतियां कराते हैं कि जिनके कारण मैं अपना और दूसरों का घर उजाड़ने का कारण बनता हूं, तो उसके भीतर नीच जीवन के लिए डर उत्पन्न हो जाएगा, और वह सत्य मोक्ष का आकांक्षी हो जायेगा।

एक गृह में अति हितकर साधन

परम पूजनीय भगवान देवात्मा की नायाब शरण का प्राप्त हो पाना किसी भी मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य है। इस सौभाग्य को सफल कर पाना ही मनुष्य जीवन की सफलता है। ऐसे ही चण्डीगढ़ के दो बुजुर्ग पति पत्नी जिन्हें परम पूजनीय भगवान देवात्मा की सेवकी का महा अधिकार मिला हुआ है, वह हर साल भृत्यु स्वामी यज्ञ के दिनों में अपने भृत्यों (सेवाकारियों) को लेकर इस यज्ञ को मनाने की पाक खुशियाँ हासिल करते हैं।

यहीं इसी साल इस यज्ञ के दिन गुजर चुके थे तो एक युवक जो उक्त दम्पत्ति के यहाँ 4-5 साल से सेवारत है हंसी हंसी अपनी वृद्धा मालकिन से पूछने लगा "माता जी इस साल वो दिन नहीं मनाया जब हमारा सम्मान होता है" तो इस पर मालकिन ने बताया कि अपने घर का एक सेवादार छुट्टी पर गया हुआ है। इस कारण अप्रैल के आखिर में उसके आ जाने पर एक दो दिन बाद सबसे मिलकर एक दिन नियत किया गया और इस दिन को अमली तौर पर व्रत मनाकर पाक खुशियाँ प्राप्त की गईं और खुशीयां बांटी गई।

नियत दिन पर सेवेरे ही फूलों के सुन्दर हारों का प्रबन्ध किया गया। एक निकटी रिश्तेदार सयोंगवश एक दिन पहले आ गये उन्होंने भी अपने एक भृत्य के साथ इस यज्ञ को मनाने में शामिल होना अपना सौभाग्य व्यक्त किया। सब मिलाकर 5 व्यक्ति हो गये तो घर की वृद्धा मालकिन और निकटी रिश्तेदार पाँचो को लेकर एक बहुत अच्छे स्तर के होटल में चले गये और इसके लिए एक स्पैशल डाईनिंग स्थान बुक करा लिया। सबने इकट्ठे बैठकर भाँत-भाँत के अपनी माँग के अनुसार बहुत कीमती क्या मीठे और क्या नमकीन पदार्थों के सेवन का आनंद लिया और मालकिन ने खुद एक-एक पदार्थ की और सिफारिश करके उन्हें खूब तृप्त किया आपसी खुशी और उच्च दर्जे की सेवा पाकर सबने पाक खुशी और तृप्ति हासिल की। इसके पश्चात सारी पार्टी घर आ गई घर में सब सेवाकारियों को ड्राईगरूम में सुन्दर सोफों पर बिठाकर उनकी स्वभाविक झिझक को दूर करते हुए शोभ्यामान किया गया। इसके बैठ जाने पर घर के बुजुर्ग ने एक एक के पास जाकर उन सबके गले में एक हार अपने और अपनी पत्नी की ओर से और एक हार उक्त सम्बन्धी की ओर से सबके गले में डालकर एक एक के कंधे वा चेहरा छूकर और सिर झुकाकर प्रणाम किया और धन्यवाद दिया और सम्मानित किया, तब बहुत जी सुन्दर और फरिश्तों के देखने के लायक दृश्य पेश हुआ। सबके दिल पाक खुशियों और गर्व से भरे हुए थे मानों वो फूले नहीं समाते थे और बुजुर्ग दम्पत्ति और सम्बन्धी के लिए धन्यवाद से भर रहे थे।

आखिर में उक्त बुजुर्ग ने सबके दरमियान बैठकर परम पूजनीय भगवान को बार-बार हृदय झुकाकर धन्यवाद देते हुए एक एक को अलग-अलग स्मरण किया, उनके स्वास्थ्य के लिए, पारिवारिक जनों के लिए दिल के भावों से शुभकामनाएँ की, शुभकामना कर्ता हित भाव से उनके भले की प्रार्थना करते रहे, सदा इमानदार और वफादार और मेहनती बने रहने की उन्हें प्रेरणा दी यह सारा साधन भी दिलों को छूने वाला था।

अंत में 200-200 रूपये भेंट किये गए और भगवान देवात्मा को धन्यवाद देते हुए यह साधन सम्मपन किया।

Published on 5th of the month
20

Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पोटेशियम की कमी से हो सकती हैं ये समस्याएं

अपच..... लम्बे समय तक अपच, गैस, एसिडिटी की समस्या रहना पोटेशियम की कमी का संकेत होता है।

मसल्स में ऐंठन.... मसल्स में ऐंठन पैदा होने लगती है। पोटेशियम मसल्स को सही तरीके से काम करने में हेल्प करता है।

पेट फूलना..... एकदम से पेट फूल जाना पोटेशियम की कमी का संकेत हो सकता है। ऐसा होने पर खाना सही तरीके से डाइजेस्ट नहीं हो पाता है और पेट फूलने लगता है।

कमजोरी..... पोटेशियम की कमी से बॉडी में एसिड की मात्रा बढ़ जाती है। इससे सुस्ती, थकान और कमजोरी भी महसूस होती है।

तनाव..... मानसिक स्वास्थ्य पर भी पोटेशियम की कमी का बुरा असर पड़ता है। ऐसे में स्ट्रेस या डिप्रेशन की समस्या हो सकती है।

ब्लड प्रेशर..... पोटेशियम की कमी के कारण बॉडी में ब्लड सर्कुलेशन ठीक तरीके से नहीं हो पाता है। इसलिए BP की प्राब्लम होने लगती है।

नींद न आना..... शरीर में पोटेशियम की कमी के कारण नींद न आने की समस्या हो सकती है।

लूजमोशन..... ज्यादा समय तक लूजमोशन और उल्टी की समस्या होना पोटेशियम की कमी का संकेत हो सकता है।

हृदय रोग..... पोटेशियम की कमी की वजह से बीपी की समस्या होने लगती है। इससे हृदय रोग का खतरा बढ़ता है।

पसीना.... अगर आपको बहुत ज्यादा गर्मी महसूस होती है या ज्यादा पसीना आता है तो यह पोटेशियम की कमी की निशानी हो सकती है।

सूचना

सत्य धर्म बोध उत्सव 6 सितम्बर से 8 सितम्बर तक देव आश्रम निकट डेरा बस्सी में मनाया जा रहा है। 3, 4, 5, 6 सितम्बर 2019 तक विशेष सत्संग रखा गया है। कृप्या पाठक नोट कर लें।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts